भारत विभाजन और सिन्धीं हिन्दुओं का भौगोलिक पुनर्वासन : अजमेर जिले के विशेष सन्दर्भ में

Partition of India and Geographical Rehabilitation of Sindhi Hindus : With Special Reference to Ajmer District

शोधकार्य का प्रारूप

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
को पीएच.डी. उपाधि हेतु

भूगोल

शोध पर्यवेक्षक –

डॉ. अजय कुमार शर्मा
व्याख्याता, भूगोल विभाग

शोधार्थी

भूमिका गोविन्दानी उर्फ राजकुमारी

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
2016

संशोधित शोध प्रारूप/क्र: एफ/शोध (भूगो./2015)/मदसविवि/66251-77/Date- 17/8/2016

APPENDIX - IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY,
AJMER

Format for Outline of Proposed Research work
(to be supplied in Six copies)

1. Nameof Scholar (In English) BHUMIKA GOVINDANI NEE RAJKUMARI
   (In Hindi) भूमिका गोविन्दानी उर्फ राजकुमारी
2. Title of the Research Work : Partition of India and geographical rehabilitation
   (In English) of Sindhi Hindus (1947-2016): with special reference to Ajmer District.
   (In Hindi) भारत विभाजन और सिन्धी हिन्दुओं का भौगोलिक पुनर्वासन : अजमेर जिले के विशेष सन्दर्भ में
3. Location
   a. Institution/Department where the work is to be done
   b. Geographical area of Investigation, if any.
4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives.
5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.)
6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review.)
7. Major Hypothesis, if any.
8. Research Methodology.
9. List of References cited.

Bhumika
10/9/2016
Signature of the Candidate with date

Outline Approved.

Name and Signature of supervisor with date & seal.

10/9/16
(Dr. Ajay K. Sharma)
Lecturer in Geography
S.P.C. Govt. College Ajmer

Scanned with CamScanner

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. Bhumika Govindani Nee Rajkumari on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have ......8...... (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is .... (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

10/9/16

Signature of the Supervisor with date

Lecturer in Geography, S.P.C. Govt. College, Ajmer

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. Bhumika Govindani Nee Rajkumari for research work if he/she is registered for Ph.D.

10/9/2016

Signature of the Principal/ Director of the Institution with date

Signature of the Head, Department with date

Department of Geography, S.P.C. Government College, Ajmer

Scanned with CamScanner

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,अजमेर

क्रः एफ–15 / शोध / (8 / 2015) / भूगोल / मदसविवि / 22600 दिनांकः 16 / 5 / 2017

स्थाई पंजीयन–पत्र

भूमिका गोविन्दानी उर्फ राजकुमारी,
751 / 26, भोलेश्वर मन्दिर के सामने,
अजमेर

विषयः– स्थाई पंजीयन की सूचना।

विषयान्तर्गत प्राचार्य, एस.पी.सी.राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, के माध्यम से अग्रेषित आपका दिनांक 01.03.2017 जिसके द्वारा आपने इस कार्यालय के पृष्ठांकित पत्रांकः 72522–23, दिनांक 07.12.16 में वर्णित प्रवेश शुल्क और पंजीयन शुल्क की राशि जमा कराना सूचित किया है, के आधार पर विश्वविद्यालय के अध्यादेश 124.11 के अन्तर्गत निम्नांकित शोध शीर्षक पर शोध कार्य करने हेतु आपका स्थाई पंजीयन किया जाता है। **स्थाई पंजीयन की दिनांक 18.07.2016 है।**

अंग्रेजी में : **" Partition of India and Geographical Rehabilitation of Sindhi Hindus : With Special Reference to Ajmer District "**

हिन्दी में : " भारत विभाजन और सिन्धी हिन्दुओं का भौगोलिक पुनर्वासन : अजमेर जिले के विशेष संदर्भ में "

सहायक कुलसचिव (शोध)

Scanned with CamScanner

प्रस्तावित शोधकार्य प्रारुप की रुपरेखा

1. शोधार्थी का नाम (in English) : **Bhumika Govindani Nee Rajkumari**

(हिन्दी में) : भूमिका गोविन्दानी उर्फ राजकुमारी

2. शोध कार्य का विषय : '' भारत विभाजन और सिन्धी हिन्दुओं का भौगोलिक पुनर्वासन : अजमेर जिले के विशेष सन्दर्भ में''

: **"Partition of India and Geographical Rehabilitation of Sindhi Hindus : with Special Reference to Ajmer District"**

3. स्थिति

a) संस्था/विभाग जहां से कार्य किया जाना है। :भूगोल विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय अजमेर (राज.)

b) भौगोलिक शोध क्षेत्र : भौगोलिक एवं सामाजिक पर्यावरण

विषय परिचय

भारत का विभाजन ब्रिटिश/अंग्रेजों के द्वारा 1947 में किया गया। जिसके द्वारा अलग देश पाकिस्तान तथा 15 अगस्त 1947 के बाद वर्तमान भारत संघ का निर्माण हुआ।

विभाजन के दौरान बंगाल प्रान्त का पूर्वी भाग पाकिस्तान में तथा पश्चिमी बंगाल भारत में रहा, उसी तरह पंजाब प्रान्त का पश्चिमी भाग पश्चिमी पाकिस्तान तथा पूर्वी भाग वर्तमान पंजाब बना। सिन्ध तो पूर्ण रूप से पाकिस्तान में सम्मिलित कर दिया गया। यह विभाजन सिर्फ भौतिक रूप से नहीं था बल्कि विभिन्न सम्पत्तियों जैसे सेना, भारतीय सिविल सेवा और अन्य प्रशासनिक सेवाएं, रेलवे तथा केन्द्रीय खजाने का भी विभाजन हुआ।

UNHCR (United Nation High Commissioner for Refugees) के अनुसार लगभग 14 लाख हिन्दू सिन्धी, सिख, मुस्लिम विभाजन के दौरान प्रवासित हुए। यह अब तक के इतिहास में सबसे बड़ा मानव सामूहिक प्रवासन है।

सिन्ध भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है। यह पाकिस्तान के चार बड़े प्रान्तों में से एक है जो कि पाकिस्तान के दक्षिणी भाग में स्थित है। यह सिन्धियों की ऐतिहासिक भूमि है जिसे स्थानीय भाषा में 'मेहरान' कहा जाता है। जिसका अर्थ है - Rain of kindness/ kindness इसके अलावा पाकिस्तान की निचली सिन्धु घाटियों को भी स्थानीय भाषा में 'मेहरान' कहा जाता है। ब्रिटिश शासन के तहत स्वतन्त्रता के कुछ वर्षों तक 1936-1955 तक सिन्ध प्रान्त को 'Sind' कहा जाता था। (21वीं शताब्दी से पहले सभी स्थानीय दस्तावेजों में सिन्ध का नाम 'Sind' था। पाकिस्तान एक्सप्रेस ट्रीब्यून अखबार के एक पत्रकार अरसलान फारूखी ने अखबार में यह कॉलम लिखा कि 'Sind' के लिए 'Sindh' नाम ज्यादा उपयुक्त है (यह हिंसा, संगठनात्मक अपराधों, राजनीतिक भ्रष्टाचार से कहीं दूर होगा)। अब सिन्ध के लोगों के लिए यह एक मुद्दा बन गया। इस पर काफी विचार के बाद सिन्ध की असेम्बली द्वारा 2012 में एक संशोधन बिल पास किया गया। यह 2010 अधिनियम का 10वां संशोधन बिल था, जिसमें 'Sind' की Spelling में 'H' जोड़ा गया। बिल के अनुसार 'सिन्धु' इन्डोस नदी का वास्तविक नाम है जो कि

सिन्ध का भी वास्तविक नाम है। यूनानियों के द्वारा सिन्धु नदी का नाम इण्डोस/इण्डस रखा गया। जब उन्होंने 125 ईसा पूर्व आक्रमणकर्ता अलेकजेण्डर के नेतृत्व में सिन्ध पर शासन किया था।

सिन्ध क्षेत्रफल के आधार पर पाकिस्तान का तीसरा बड़ा प्रान्त है। प्रथम स्थान पर बलुचिस्तान तथा द्वितीय स्थान पंजाब का है। 2011 के आंकड़ों के अनुसार सिन्ध का क्षेत्रफल 140,914 वर्ग किमी है (54,407मी^{2}) है। यहां की जनसंख्या 55,245,497 है तथा जनसंख्या घनत्व 310 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। कराची हैदराबाद, सुक्कर, लकराना सिन्ध के प्रमुख नगर है। विभाजन से पूर्व 1947 में सिन्ध की जनसंख्या 14,00,000 थी। 1950 में लगभग 12,25,000 सिन्धी हिन्दूओं ने सिन्ध छोड़ा और भारत और दुनिया के अन्य भागों में चले गये। सिन्ध प्रान्त पश्चिम में बलुचिस्तान सीमा द्वारा, उत्तर में पंजाब प्रान्त द्वारा, पूर्व में भारत के राजस्थान और गुजरात द्वारा तथा दक्षिण में अरब सागर द्वारा घिरा है। कराची सिन्ध का सबसे बड़ा शहर है जो देश का सबसे बड़ा बन्दरगाह है यह वर्तमान में सिन्ध प्रान्त की राजधानी भी है।

पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था प्रमुखतया कृषि और पूर्ण रूप से सिंचाई पर निर्भर है। यहां जल का मुख्य स्त्रोत 'सिन्धु नदी' है। सिन्ध पारसी तथा अरबी भाषा का एक शब्द है जो कि संस्कृत शब्द सिन्धु से लिया गया है जिसका अर्थ सिन्धु नदी से लिया जाता है। यूनानियों के द्वारा इसे इण्डो Indo नाम प्रदान किया गया। इसका वर्तमान नाम Indos या Indus है। सिन्धु नदी एशिया की प्रमुख लम्बी नदियों में से एक है जिसकी लम्बाई 3,180 किलोमीटर है। यह तिब्बत के पठार के पश्चिमी घाट मानसरोवर से बहती है। भारत में यह जम्मू और कश्मीर से प्रवाहित होती हुई पाकिस्तान में प्रवाहित होती है। जम्मू-कश्मीर के लद्दाख प्रान्त से बहती हुई दक्षिण में पूर्ण रूप से पंजाब में और पाकिस्तान में सिन्ध के कराची बन्दरगाह के समीप अरब सागर में मिलती है। इसकी मुख्य सहायक नदियां चिनाब, राबी, व्यास, सतलज और झेलम है।

सिन्ध की भौगोलिक स्थिति

सिन्ध दक्षिण एशिया का पश्चिमी भाग है। भौगोलिक दृष्टि से तीसरा बड़ा प्रान्त है जिसका विस्तार 579 किमी. उत्तर से दक्षिण 442 किमी या 281 किमी. औसत पूर्व से पश्चिम तक है, तथा सिन्ध का क्षेत्रफल 14,915 वर्ग किमी. है। यह पूर्व में थार मरूस्थल से पश्चिम में किरथर पर्वत से दक्षिण में अरब सागर से घिरा है, तथा मध्य में सिन्धु नदी का उपजाऊ मैदान है।

सिन्ध की जलवायु उष्ण से अर्द्धउष्ण प्रकार की है जो कि गर्मियों में गर्म तथा सर्दियों में मृदु से गर्म रहता है।

मई और अगस्त का तापमान - 46ºC (115ºF)

दिसम्बर और जनवरी का औसत तापमान - 26º (36ºF)

जुलाई- अगस्त में वार्षिक वर्षा का वितरण 7'' इंच रहता है।

सिन्ध को तीन जलवायु प्रदेशों में बांटा जा सकता है -

(1) सिरों (ऊपरी भाग) - जेकोबाबाद के मध्य

(2) विकहोलो (मध्य भाग) - हैदराबाद के मध्य

(3) लार (निचला भाग) - कराची के मध्य

सिन्ध अल्प वनस्पति क्षेत्र है सिंचित सिन्धु घाटी क्षेत्र की सभी जगह अल्प वनस्पति पाई जाती है। पाम, खैर, लोहिरो वृक्ष पश्चिमी उच्च प्रदेश में पाये जाते हैं। सिन्धु घाटी क्षेत्र घना जंगल का क्षेत्र है। बबूल, नीम, बैर, जुजुबा मुख्य वृक्ष है। फलों में अमरूद, नारंगी, चीकू, केला प्रमुख है। जंगली भालू, जंगली भेड़, हिरण, करूनझार रॉकी पर्वत नगर थार सिन्ध में मुख्यतया पाये जाते हैं।

सिन्ध में शिक्षा का स्तर में पिछले वर्षों की अपेक्षा सुधार आया है। यहां पर कई पब्लिक और निजी शिक्षण संस्थान है। PSLM (Pakistan Social and living

standard Measurement) के सर्वेक्षण 2013-14 के अनुसार 2013-14 में पाकिस्तान की साक्षरता दर 58% है जो कि 2012-13 में 60% थी। साक्षरता दर में 2% की कमी आई है। UNFSCO (United Nations of Education, Scientific & Cultural Organization) के अनुसार 1950 में पाकिस्तान की साक्षरता दर 14% थी। सिन्ध की साक्षरता दर 2013-14 के अनुसार पुरूष वर्ग की 67% तथा महिला वर्ग की 43% है, तथा कुल साक्षरता दर 56% है। यहां पर सिन्धी, उर्दू, पंजाबी, भाषाएं मुख्य रूप से बोली जाती है। इनके अलावा थारी, कश्मीरी, गुजराती, मेमोनी दारी, कच्छी, बंगाली, सहिना, पारकारी कोली भाषाएं भी बोली जाती है। सिन्धी भाषा सबसे ज्यादा (2011 के अनुसार) 35 लाख लोगों के द्वारा बोली जाती है।

पाकिस्तानी अर्थव्यवस्था सिन्ध अर्थव्यवस्था का दूसरा स्थान है। 2010 के अनुसार इसकी Per Capita GDP $1,400 है। सिन्धु पाकिस्तान की आर्थिक गतिविधि का मुख्य भाग है क्योंकि कराची सिन्धु नदी के निकट है अत: यहां पर कई उद्योग विकसित हैं। सिन्ध पाकिस्तान का मुख्य प्राकृतिक गैस उत्पादक प्रान्त है। कृषि में कपास, गेहूँ, चावल, गन्ना, खजूर, केला और आम मुख्य फसलें हैं।

पर्यटन क्षेत्रों में लरकाना के पास मोहनजोदड़ो, रूनी कोट, कोट देजी, नानगर पारकर का जैन मन्दिर, साधु बेला का ऐतिहासिक मन्दिर सुक्कर में प्रमुख है। सिन्ध में सुक्कर और रोहरी के सिन्धु नदी के मध्य द्वीप पर हिन्दु व मुसलमान दोनों के मन्दिर और दरगाह हैं। दक्षिणी सिन्ध में उडेरोलाल का मन्दिर तथा वही सहवान में शाहबाज कलन्दर की प्रसिद्ध दरगाह भी है।

सिन्ध का इतिहास एवं निर्गमन

मोहनजोदड़ो सभ्यता के समय 7000 ईसा पूर्व सिन्ध इण्डुस घाटी में बसा था। इस समय इण्डोस घाटी में नवपाषाण बस्तियों का विकास हुआ। मोहनजोदड़ो की सभ्यता लगभग 2500-3000 ईसा पूर्व सिन्ध पाकिस्तान में बनी। यह सिन्धु सभ्यता का सबसे प्राचीन तथा विस्तृत बसाव है। मोहनजोदड़ो का सिन्धी अर्थ है ''मुर्दो का टीला''। यह

दुनिया का सबसे पुराना नियोजित और उत्कृष्ट शहर माना जाता है। यह सिन्धु घाटी सभ्यता का सबसे उन्नत/विकसित शहर है। यह नगर अवशेष सिन्धु नदी के किनारे सक्खर जिले में स्थित है। इसकी खोज राखलदास बर्नप्पी ने 1922 ई. में की थी। यह सिन्ध के लकराना जिले में इण्डोस नदी के दायें किनारे पर स्थित है। यह लडकाना/लरकाना जिले से लगभग 28 किलोमीटर सिन्धु घाटी के बाद के मैदान के मध्य स्थित है।

मोहनजोदड़ो की सभ्यता उस समय की सभी सभ्यताओं में से अग्रणी तथा आधुनिक सभ्यता थी। नगर नियोजन, सड़कों का विन्यास, विशाल स्नानाघर इसकी विशेषता है। 1500 ईसा पूर्व सिन्ध पर आर्यों ने वैदिक सभ्यता के रूप में शासन किया जिसे हिन्दूत्व के नाम से जाना जाता है। 519 ईसा पूर्व में सिन्ध पर पारसियों ने विजय प्राप्त की। 326 ईसा पूर्व अलेकजेण्डर के नेतृत्व में यूनानियों द्वारा सिन्ध पर शासन किया गया पर यह शासन कुछ दशकों तक ही रहा। अलेकजेण्डर की मृत्यु के पश्चात् सेल्युसिड ने कुछ समय के लिए सिन्ध पर शासन किया।

320-293 ईसा पूर्व में चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा सिन्ध पर मौर्य साम्राज्य रहा। 273-232 ईसा पूर्व तक बिन्दुसार के पुत्र महान् अशोक का सिन्ध पर शासन रहा। बिन्दुसार के बड़े पुत्र सुसिमा के कहने पर उन्होंने अशोक को सिन्ध के उत्तर पश्चिमी भाग तक्षशिला को वश में करने तथा विद्रोह करने के लिए भेजा। तक्षशिला उस समय बहुत ही हिंसात्मक स्थान था क्योंकि जनसंख्या का अधिकांश भाग इण्डो-ग्रीक था तथा यह स्वयं सुसिमा द्वारा कुप्रबन्धित था। सुसिमा उस समय तक्षशिला का गवर्नर था, परन्तु अशोक और उसकी सेना के आने की खबर सुनकर तक्षशिला के विद्रोहियों द्वारा बिना किसी विद्रोह के उनका स्वागत किया गया और बिना किसी लड़ाई के विद्रोह का अन्त हुआ। अशोक के शासन में सिन्ध पर बौद्ध धर्म का प्रसार किया गया।

711 ईसा पश्चात् मुस्लिम अरब शासक मुहम्मद-बिन-कासिम का सिन्ध पर शासन रहा। कासिम ने सिन्ध तथा मुल्तान के दक्षिणी भाग पर विजय प्राप्त की तथा सिन्धु में इस्लाम धर्म का जबरन प्रसार किया। इसके बाद कई सुन्नी मुस्लिम और राजपूत शासक यहां आकर बसे। अकबर के नेतृत्व में 1509 में मुगल शासकों द्वारा भी सिन्ध पर शासन किया गया। 1783-1843 तक सिन्ध पर 'तालपुर मीर' का साम्राज्य रहा। तालपुर एक

सिन्धी बोलने वाली बलुच जाति थी जो कि सिन्ध, पंजाब और बलुचिस्तान में बसी थी। 1843 में यह बाम्बे प्रेसीडेन्सी का भाग बन गया और जल्द ही सिन्ध प्रान्त बन गया। 1 अप्रेल 1936 को सिन्ध प्रान्त बोम्बे प्रेसीडेन्सी से अलग हो गया और ब्रिटिश इण्डिया का भाग बन गया। 1947 के स्वतंत्रता के पश्चात् सिन्ध पाकिस्तान का प्रान्त बना। 1955 में प्रधानमंत्री चौधरी मोहम्मद अली द्वारा घोषित एक संभाग योजना के तहत सिन्ध को पश्चिमी पाकिस्तान में सम्मिलित कर लिया गया।

1947 का वर्ष सिन्धियों के लिए मिश्रित भावना लाया। क्योंकि उनके लिए स्वतंत्रता का अर्थ कुछ भी नहीं था। जब सारा भारत स्वतंत्रता दिवस मना रहा था तब पंजाब, सिन्ध और बंगाल के लोग अपनी मातृभूमि से अलग होने का आघात झेल रहे थे। पंजाबी लोगों का प्रवासन तो पश्चिम से पूर्वी पंजाब में हुआ तथा बंगाली लोग पूर्व से पश्चिमी बंगाल में प्रवासित हुए। लेकिन सिन्धी प्रवासित होकर कहा जाये यह अपरिभाषित सा था। एक ऐतिहासिक निर्णय ने सिन्धियों को जमींदार से विस्थापितों में परिवर्तित कर दिया। 15 अगस्त 1947 की सुबह जब सारा देश स्वतंत्रता के साथ उठा तब सिन्धी लोगों ने अपने आपको मातृभूमि रहित, निराश्रित और राज्य रहित पाया।

अरजन मीरचन्दानी 'शाद' जिनका जन्म सुक्कर 1924 में सिन्ध में हुआ यह एक प्रसिद्ध कवि तथा साहित्यिक आलोचक है। यह पहले कवि है जिन्होंने विभाजन के दर्द को कविताओं के रूप में प्रस्तुत किया है। हाल ही में उन्हें महाराष्ट्र सरकार सिन्धी अकेडमी द्वारा सिन्धी साहित्य में अभूतपूर्व योगदान के लिए 'Lifetime achievement Award' भी मिला है के अनुसार

> Even though I am safe within these walls, I have always felt
> As though I am sleeping on the open road […..] now you
> Know only these open roads as your home,
> These roads which well take you anywhere else
> But will never turn towards your home.
>
> \- Arjan 'Shad' Mirchandani

Lachhman 'Komal' जिनका जन्म सिन्ध के जिला नौशाहरों फेरोज में 1936 में हुआ। वह 11 वर्ष के थे हिंसक भारत विभाजन के दौरान सिन्ध छोड़कर भारत आये उसके बाद उन्होंने भारत में उन्होंने कवितायें लिखना प्रारम्भ किया। सिन्धी साहित्य में उनका नाम प्रथम स्थान पर है। उन्हीं की लिखी एक पंक्ति में उन्होंने विभाजन के दौरान सिन्धी हिन्दुओं की मानसिक व्यथा का वर्णन करते हुए लिखा है-

We have with us neither death nor life.
We lack completely in autonomy.

- Lachhman 'Komal'

सिन्ध से सिन्धियों का प्रवासन मुख्य रूप से सड़क मार्ग और जल मार्ग द्वारा हुआ। अल्प मात्रा में वायु मार्ग द्वारा प्रवासित हुए। 1951 के जनसंख्या आंकड़ों के अनुसार सिन्धी मुख्य रूप से पश्चिमी भारत में बॉम्बे, सौराष्ट्र तथा कच्छ, में प्रवासित हुए। अकेले बॉम्बे में कुल 2,77,267 सिन्धी प्रवासित होकर आये।

मध्य भारत में - मध्य प्रदेश, बैरागढ़ मध्य भारत, हैदराबाद भोपाल तथा विन्ध्य प्रदेश में बसाव था। **उत्तरी पश्चिमी भारत में** - राजस्थान, पंजाब, पेपसु अजमेर, दिल्ली, बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश में रहा। उ.प. भारत की उस समय की सिन्धी जनसंख्या 2,16,967 थी। **दक्षिणी भारत में** - 8,082 सिन्धी जनसंख्या थी। यहां सिन्धी कॉलोनी हैदराबाद (सिकन्दराबाद) मुख्य रूप से मद्रास, मैसूर, Tranvancore कोचीन तथा कुर्वा और बैंगलोर में कोक्स टाऊन में आकर बसे। **पूर्वी भारत में** - बिहार, उड़ीसा, प. बंगाल, चन्द्रनागौर में प्रवासित हुए तथा यहां कुल सिन्धी लोगों की जनसंख्या 6,181 थी। **उत्तरी भारत में** - उत्तर प्रदेश बसाव का स्थान रहा। जहां की कुल जनसंख्या 69,476 थी, कुल 7,76,229 सिन्धी विभाजन के दौरान भारत में आकर पुर्नस्थापित हुए।

बॉम्बे के बाद राजस्थान पुर्नस्थापन के लिए सिन्धियों की दूसरी पसन्द रहा। क्योंकि जोधपुर रेलवे के द्वारा यात्रियों को हैदराबाद (सिन्ध) और मीरपुर खास से पाली और मारवाड़ छोड़ा। जहां से विस्था. को अजमेर, जोधपुर, उदयपुर, जयपुर और अलवर भेज

दिया गया। इस ट्रेन का नाम ‘The King Train’ था। बॉम्बे में मिलिट्री छावनियों में इनके लिए कई शिविर लगाये गये। इसके अलावा सभी जगह सिन्धियों के लिए कैम्प लगाये गये। कैम्प जनसंख्या आंकड़ों (1948) के अनुसार 4,52,800 व सिन्धी हिन्दु भारत के विभिन्न भागों में कैम्प में रहे। अजमेर मेरवाड़ा देवली से इनकी संख्या 10,200 थी।

मार्च (मध्य) 1948 में लगभग 2000 सिन्धी रोज जहाज और ट्रेन द्वारा छोड़े गये मध्य अप्रेल तक इनकी संख्या 3000 हो गई। बॉम्बे में तो Refugee Camp पहले से ही भर गये थे। अतः विस्थापितों को बॉम्बे से निकट क्षेत्र में लगे शिविर जैसे देवली, पीम्परी, दोंद में स्थानान्तरित कर दिया गया। मध्य जनवरी 1948 में आने वाले सिन्धु हिन्दुओं के लिए कई राज्यों जैसे बड़ौदा, जोधपुर, जयपुर, बीकानेर, उदयपुर, इन्दौर इनके अलावा गुजरात में भावनगर और जामनगर में भी शिविर लगाये गये। जनसंख्या के आंकड़ों से दो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं –

(1) वे सभी लोग जिन्होंने सिन्ध छोड़ा जरूरी नहीं कि कैम्प में रहे हो कुछ अपने रिश्तेदारों के घर तथा कुछ ने अपने मकान ले लिये होंगे।

(2) यद्यपि आने वाले सिन्धियों की जनसंख्या लगभग 12 लाख अनुमानित थी परन्तु 1951 के अन्त तक 4.5 लाख सिन्धी हिन्दू ही रह गये। इसका यह कारण हो सकता है –

(i) कई सिन्धी भारत छोड़ अन्य देशों में बस गये।

(ii) कई सिन्धी मारे गये हो तथा कई लोग सदमे में, परेशानी तथा निराशा से ही मर गये हो।

अजमेर में सिन्धियों के लिए कैम्प मुख्यतः नसीराबाद छावनी, अजमेर परकोटा क्षेत्र (आशा गंज, पड़ाव, दिल्ली गेट, आगरा गेट, ऊसरी गेट) में लगाये गये।

महाराष्ट्र में उल्लासनगर, यहां सिन्धी हिन्दूआं शरणार्थियों की 66 वर्ष पुरानी कॉलोनी है जो कि मुम्बई से 58 किमी. दूर थाणे जिले में है। जिसे कल्याण मिलिट्री कैम्प

भी कहा जाता है। उल्लास नगर में विशेषतया 3600 सैनिकों के लिए रहने का स्थान बनाया गया था। अत: यह विस्थापितों के लिए मुख्य कैम्प के रूप में रहा।

सिन्धी हिन्दू पुनर्वासन (1947–2016 तक)

1947–1960 तक - 1947–48 वर्ष तक तो सिन्ध से सिन्धी हिन्दू प्रवासन ही चलता रहा। कई लोग रेल मार्ग, सड़क मार्ग द्वारा हिन्दुस्तान भेजे गये। सभी लोग इस समय आतंकित, हताश तथा निराश थे। एक तरफ तो अपने जन्मभूमि को छोड़ने तथा अपनों के बिछड़ने का दर्द। वहीं दूसरी ओर नये क्षेत्र में किस तरह से जीवन व्यतीत होगा इसकी चिन्ता। यहाँ जिन शिविरों में उन्हें रखा गया वहाँ उनकी स्थिति कई जगह तो बहुत ही कमजोर थी। वे उनकी मूलभूत आवश्यकता की भी पूर्ति करने में भी असमर्थ थे। कई जगहों पर उन्हें आलोचनाओं, प्रताड़ना का भी शिकार होना पड़ा। Times of India 1948 के अनुसार थाणे के अकबर कैम्प के अलावा कोई भी अन्य कैम्प इतने ज्यादा आरामदायक नहीं थे।

कुछ वर्ष उन्हें अपने आपको नये समाज, नये घर, नये देश अनुसार ढालने में लगे। रोजगार के साधन भी उपलब्ध नहीं थे। सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में कार्य दिये जा रहे थे। जबकि सिन्धी मुख्य रूप से व्यापारी थे। प्रवासन के बाद सिन्धी हिन्दुओं में एक लहर विदेशों में जाने की चली। रोजगार की तलाश में कई सिन्धी विदेशों में ही जाकर बस गये और परिवारों में से केवल एक ही पुरूष रोजगार के लिए विदेशों में मुख्यत: अफ्रीका, दुबई, शाहजहां, मास्को, चीन में जाने लगे तथा 3 वर्ष पश्चात् 6 माह के लिए परिवार से मिलने आया करते थे।

अब लोगों ने कुछ व्यवसाय करने शुरू किये। पहले तो शरणार्थियों के साथ समाज द्वारा सहानुभूति पूर्ण व्यवहार किया जा रहा था क्योंकि विभाजन के घाव अभी भरे नहीं थे। जैसे ही उन्होंने आर्थिक जीवन की शुरूआत की तो उन्हें विरोध और जलन की भावना का सामना करना पड़ा। परन्तु जल्द ही प्रवासित हुए सिन्धी हिन्दुओं ने अपना नया सामाजिक वातावरण स्थापित कर लिया और अपनी नई भूमि के साथ समायोजित हो गये क्योंकि

उनके लिए अपने जन्म भूमि सिन्ध के दरवाजे अब पूर्ण रूप से बन्द हो गये थे। सिन्धी कर्मठ और मेहनती थे उन्होंने हार नहीं मानी और आगे बढ़ते रहे और समाज में अपना स्थान बनाते रहे।

1960–70 तक – यह दशक सिन्धी हिन्दुओं के लिए पहले दशक की अपेक्षा थोड़ा ठीक रहा क्योंकि अब वे नये समाज तथा रोजगार के अनुसार अपने आपको ढाल चुके थे। रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं का भी काफी योगदान रहा। शुरूआत छोटे–छोटे प्राथमिक तथा द्वितीयक उद्योग धन्धों से की गई। अब सामाजिक, आर्थिक बदलाव के साथ कुछ शैक्षिक, सांस्कृतिक और धार्मिक बदलाव भी आये। इतना सब होते हुए भी उन्होंने अपनी सभ्यता और संस्कृति को पूजा, मेलों, त्यौहारों द्वारा बनाये रखा। इसके साथ अपनी भाषा को भी सामाजिक भाषा के रूप में बनाये रखा।

1970–80 तक – अब सिन्धी हिन्दुओं का आर्थिक ढाँचा अपने सिन्ध की तरह सन्तुलित हो गया था। अब वे जमींदार और अन्य व्यवसायों से जुड़े हुए लोग बन गये और स्वयं के मकान भी ले लिए। यह सब उनके कठिन कार्य का परिणाम था। सिन्ध में मुसलमानों के साथ सिन्धी हिन्दुओं के सम्बन्ध काफी अच्छे थे। कला और शिल्प के क्षेत्र में मिलजुल कर कार्य करते थे। मुसलमान ज़री का काम, लकड़ी पर नक्काशी का काम, गहने बनाना आदि काम करते थे तथा सिन्धी हिन्दू उन्हें दूर बेचने ले जाते इन्हें 'Sindhi work' के नाम से बेचा जाता था, परन्तु विभाजन के बाद इस सुखद रिश्ते का अन्त हुआ और दोनो ही अपने अलग–अलग व्यवसाय में जुट गये।

1980 के दशक में सिन्धी आर्थिक दृष्टि से और सुदृढ़ हो गये। जिन उद्योग–धन्धों को उन्होंने छोटे पैमाने पर शुरू किया था अब उन क्षेत्रों में वे और विकसित होते हैं तथा वे सफल व्यापारियों के रूप में उभरे। सिन्धी के व्यापारिक क्षेत्र में विकास का एक कारण तो उनका सौम्य और मृदु व्यवहार रहा वहीं दूसरी और वे वस्तु विक्रय में लाभ बहुत कम रखते थे। अतः उन्होंने इस समय उन्नति के नये आयामों को छुआ। इसके अलावा 80 के दशक में रोजगार के विदेशों में भी सिन्धी लोगों द्वारा प्रस्थान किया गया। इस प्रकार सिन्धियों का देश के लिए विदेशी मुद्रा के अर्जन में भी विशेष योगदान रहा।

<u>1980-90 तक</u> - आर्थिक रूप से विकसित होने के बाद सिन्धी समाज द्वारा शिक्षा, साहित्य, राजनीति खेल जगत में भी विशेष योगदान किया गया। इस समय महाराष्ट्र में मुख्य रूप से कई सिन्धियों द्वारा महाविद्यालयों स्कूलों, इंजीनियरिंग संस्थानों की स्थापना भी गई। जैसे TSEC (Thadomal Shahani Engineering college) मुम्बई महाराष्ट्र जो कि 1983 में स्थापित किया गया। फिल्मी अभिनय जगत में से भी कई सिन्धी नये सितारों के रूप में उभरे जैसे असरानी, अमजद खान आदि अपने समय के लोकप्रिय कलाकार रहे। साहित्य के क्षेत्र में मोतीलाल जोतवानी का नाम अग्रणी है। इन्होंने लगभग 60 किताबें सिन्धी, हिन्दी तथा सिन्धी भाषा में कि कविता उपन्यास, लघु कहानियों के रूप में थी। इनकी Sandoundham Te Sarakuni (1982) और Sufis of Sindh (1986) उस समय की प्रसिद्ध पुस्तकें रही।

इस प्रकार विभाजन के पश्चात् अपने आपको नये समाज के अनुसार बदलना तथा समाज के विकास के लिए लगभग सभी क्षेत्रों में अपना योगदान देना काफी सराहनीय है।

<u>1990-2000 तक</u> - इस दशकर में आर्थिक विकास के साथ-साथ में सिन्धी समाज के लोगों द्वारा शैक्षिक विकास पर भी शिक्षा पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया। वे अपने बच्चों को अपने क्षेत्र में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी पढ़ने के लिए भेजने लगे। इसमें यूरोप, अमेरिका और हांगकांग मुख्य रहे। इसके द्वारा समाज द्वारा कुछ लहर राजनीतिक क्षेत्र में भाग लेने में भी चली। जैसे लाल कृष्ण आडवाणी जी के द्वारा 1998 में गृह मन्त्री पद के लिए शपथ ली गई तथा कुछ ही समय बाद उप-प्रधानमंत्री का पद धारण किया।

इन सब क्षेत्रों में विकास के साथ कानून और न्याय का क्षेत्र कैसे अछूता रहा। प्रसिद्ध Minister of Law & Justic राम जेठमलानी को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। इनको एक प्रसिद्ध वकील के रूप में ख्याति प्राप्त हुई। 1947 के विभाजन के बाद इनका सब कुछ पीछे छूट गया और उन्होंने हार नहीं मानी और संघर्षरत रहते हुए इस मुकाम पर पहुंचे। कला और साहित्य के क्षेत्र में भी कई सिन्धी कवि, लेखक, लघु कहानी लेखकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

<u>2000 से 2016 तक</u> – आज विभाजन को 60 से वर्ष से भी ज्यादा समय हो चुका है। इन 10 दशकों में सिन्धियों द्वारा धन अर्जित किया जा चुका है और उनमें कई बदलाव आये हैं, परन्तु आज सिन्धी भाषा जैसे सिन्धियों के दैनिक जीवन से खोती जा रही है।

विस्थापन के पश्चात् सिन्धी हिन्दू अपनी पारम्परिक संरचना से भी हटते चले गये। वे अपने भौतिक और सांस्कृतिक वातावरण से भी अलग हो गये जिसने उन्हें बांध रखा था। सिन्धी संस्कृति इन्डोस नदी के किनारे पनपी थी। वही उनके मन्दिर, सन्तों की धुली, सूफी आश्रम थे तथा मेले, त्यौहार सिन्धु नदी के किनारे मनाये गये।

सिन्धी वातावरण से दूर होना और नये वातावरण से मिलना उनमें कई धार्मिक बदलाव लाया। जैसे धीरे-धीरे महराष्ट्र में सिन्धियों ने गणेश चतुर्थी के गणपति लाना शुरू किया, बंगाल में दुर्गा पूजा, राजस्थान में देवी पूजा में भाग लेना, गुजरात में नवरात्रि का पालन करना शुरू कर दिया। इस प्रकार उन्होंने अपने-आपको एक सांस्कृतिक वातावरण के अनुसार ढाल लिया। वे अन्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा अनुकूलशील रहे क्योंकि सिन्ध की प्रकृति निरन्तर परिवर्तन की मांग कर रही थी।

भाषा परिवर्तन करना बहुत ही संवेदनशील है। सिन्धी लोगों को अपने नये वातावरण अलग समाज के लोगों से बातचीत के लिए विभिन्न भाषाओं का उपयोग करना पड़ा। सिन्धी स्वभाव से व्यवहारिक है अतः उन्हें लगा कि स्थानीय भाषा उनके लिए एक सम्पत्ति है। यह उन्हें स्थानीय समाज के लोगों के साथ सामन्जस्य स्थापि करने में सहायक होगी और यह उन्हें व्यापार में भी मदद करेगी। किसी भी भाषा का यदि ज्यादा उपयोग ना हो तो वह ज्यादा समय के लिए नहीं रह सकती। सिन्धी भाषा के साथ भी ऐसा ही हुआ। धीरे-धीरे सिन्धी विद्यालय बन्द होते चले गये क्योंकि सिन्धियों को ऐसा लगा कि सिन्धी भाषा का कोई उपयोग नहीं है। यही नहीं उन्होंने अपने बच्चों से भी अंग्रेजी या हिन्दी में बोलना शुरू कर दिया है। उन्होंने अपनी संस्कृति को क्षेत्र के साथ पुनः संशोधित किया तथा सिन्धी समाज की नई श्रेणी उभरी जो कि मराठी सिन्धी, गुजराती, सिन्धी राजस्थानी सिन्धी के कई रूपों में थी। यह परिवर्तन प्रक्रिया को त्वरित गति से आत्मसात करता रहा।

आज सिन्धी समाज व्यापार में प्रथम स्थान पर है। जो विदेशों में भी काफी हद तक सफल रहे हैं। परन्तु उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य अब लुप्त प्राय से हैं।

2010-2016- अपनी खोती हुई सभ्यता और संस्कृति को बचाने के लिए कई सिन्धी सामाजिक संगठन खोले गये। जैसे 'सीता सिन्धु भवन' जो स्वर्गीय राम पंजवानी द्वारा शुरू किया गया। 'Sukidha Foundation' राम जाहवरानी का Sahyog Foundation और नानिक रूपानी का 'Priyadharshini Academy' प्रमुख संगठन है। इनके मुख्य लक्ष्य निम्न है -

1. सिन्धी संस्कृति, भाषा और कला को प्रोत्साहित करना।
2. सिन्धी समाज के युवाओं महिलाओं और गरीबों की मदद करना।
3. सिन्धी समाज को सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु एकजुट करना।
4. सिन्धी प्रतिभाओं को खोजना और उसे प्रोत्साहित करना।

सिन्धोलोजी - IIS (Indian Institute of Sindhology) यह अक्टू. 1989 में कांडला बन्दरगाह पश्चिमी घाट गुजरात राज्य के आदिपुर गांधीधाम में स्थापित किया गया। यह सिन्धी संस्कृति को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से स्थापित किया गया। यहां सिन्धी भाषा, साहित्य, शिक्षा, कला और संस्कृति के अध्ययन तथा शोध केन्द्र है। इसके मुख्य उद्देश्य निम्न है-

(1) सिन्धी भाषा को प्रोत्साहित करना।

(2) सिन्धी मौखिक संस्कृति (Vocal Culture) को सुरक्षित रखना।

सिन्धियों के द्वारा न केवल अपने देश में व्यवसायिक उन्नति की गई बल्कि विदेशों में भी अपना परचम लहराया। UAE के मुकेश जगतियानी जिन्होंने अपना काम दुबई में एक छोटे से खुदरा व्यापार से शुरू किया। आज वे दुबई Landmark Group के चेयरमैन है और उनकी वार्षिक आमदनी 5.0 billion US $ (April 2015) है। हरी नारूमल हरिलीला जिन्होंने हांगकांग में प्रसिद्ध भारतीय सिन्धी उद्योगपति के रूप में ख्याति

प्राप्त की। राजन बिहारीलाल राहेजा मुम्बई के राजन राहेजा ग्रुप के चेयरमैन के रूप में रहे। इनकी नवम्बर 2015 के अनुसार वार्षिक आमदनी US $ 1.99 billion थी।

खेल जगत में पंकज अरजन आडवानी नाम स्नूकर खेल में उल्लेखनीय है। 2004 को इन्हें अर्जुन अवार्ड, 2006 में राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार, 2009 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

उल्लास नगर जो कि मुम्बई के उत्तरी-पूर्वी भाग में स्थित है। यह विभाजन के दौरान आये सिन्धी विस्थापितों के लिए बनाया गया नगर था जो वर्तमान में सिन्धी कॉलोनी के रूप में बसा है। **मुम्बई के DNA India E-Newspaper Wed 24 Feb 2010-** 1:25 am के अनुसार उल्लास नगर में 4 लाख सिन्धी हिन्दूओं में से 7000 (1.75%) ने पिछले दो वर्षों में अपना धर्म बदल कर ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया है और उनकी आस्था न केवल ईसाई धर्म से है कुछ ने तो अपने हिन्दू नाम भी बदल दिये हैं। यह सिन्धी समाज के लिए एक चिन्ता का विषय बनता जा रहा है।

इस प्रकार विभाजन से अब तक सिन्धी समाज में कई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक बदलाव आये हैं और धीरे-धीरे उन्होंने अपनी जड़ों को भारत में पुर्नस्थापित कर लिया। यह सब इतना आसान न था परन्तु हार न मानना और आगे बढ़ते रहने की भावना के कारण ही आज सिन्धी हिन्दू इस मुकाम पर हैं। परन्तु पिछले कुछ वर्षों में सिन्धी समाज में जो भाषायी तथा सांस्कृतिक बदलाव आये वह चिन्ताजनक विषय है परन्तु सिन्धी समाज इसे दूर करने के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रयासरत है।

जिये सिन्ध आन्दोलन

लेखक और सम्पादक दीपक भारतदीप, ग्वालियर के द्वारा प्रकाशित एक लेख के अनुसार भारत विभाजन के समय से ही जम्मू कश्मीर का मुद्दा बहुत ही संवेदनशील रहा। भारत का बंटवारा कर पाकिस्तान बना है। इधर पेशेवर बुद्धिजीवी विदेशी प्रयोजन के चलते मानवाधिकारों की आड़ में गाहे बगाहे जनमत संग्रह की बात करते हैं। कुछ

बुद्धिजीवी इस बात को जानते हैं कि यह सब केवल पैसे का खेल है इसलिए बोलते नहीं है। बयान के बाद मामला दब जाता है इसलिए क्या विवाद करना ?

अलबत्ता इन बुद्धिजीवियों को कथित स्वैच्छिक समाज सेवकों को यह बता दे कि विभाजन के समय सिन्ध और पंजाब से आये लोग हिन्दी नहीं जानते थे इसलिए अपनी बात को न कह पाये न लिख पाये। उन्होंने अपनी नई पीड़ा अपनी नई पीढ़ी को सुनाई जो अब हिन्दी लिखती और पढ़ती है। यह पेशेवर बुद्धिजीवी अपने उन बुजुर्गों की बतायी राह पर चल रहे हैं जिसका सामना बंटवारा झेलने वाली पीढ़ी से नहीं हुआ मगर नई पीढ़ी से होगा।

बंटवारे का सच क्या था? वहां रहते हुए और फिर यहां आकर अपने ही देश में शरणार्थी के रूप में कैसी पीड़ा झेली इस सच का बयान अभी तक नहीं हुआ है। विभाजन से पूर्व पाकिस्तान में सिंध, बलूचिस्तान और पंजाब प्रान्तों में क्या जनमत कराया गया था? पाकिस्तान जम्मू कश्मीर का स्वतन्त्र अस्तित्व स्वीकार नहीं करता और जनमत संग्रह की मांग करने वाले खुले रूप से उससे हमदर्दी रखते हैं। ऐसे में उनका मतलब पूरा कश्मीर पाकिस्तान को दे देना ही है। कुछ राष्ट्रवादियों का यह प्रश्न इन मानवाधिकारियों के सामने संकट खड़ा कर सकता है कि '**सिन्ध किसी के बाप का था जो पाकिस्तान को दे दिया या किसी के बाप का है जो कहता है पाकिस्तान का हिस्सा है।**' जम्मू कश्मीर को अपने साथ मिलाने का सपना तो तब पूरा हो जब वह पहले बलूचिस्तान, सीमा प्रान्त और सिन्ध को आजाद करें जहां की आग उन्हें जलाये दे रहा है।

इन संकीर्ण बुद्धिजीवियों की नजर केवल उस नक्शे तक जाती है जो अंग्रेज थमा गये जबकि राष्ट्रवादी इस बात को नहीं भूलते कि यह धोखा था। सब लोग जम्मू कश्मीर पर बोलते हैं पर उस सिंध पर कोई कुछ नहीं बोलता जो हमारे राष्ट्रगीत में तो है पर नक्शे में नहीं है।

Jiye Sindh अर्थात् Long live Sindh यह आन्दोलन सिन्धी राजनेता G.M. Syed द्वारा सिन्ध एक देश 'सिन्ध देश' के नाम से कल्पित एक परिकल्पना के रूप में था जो कि 1967 में सैयद और पीर अली मोहम्मद रशदी के नेतृत्व में उभरा। यह केन्द्रीय सरकार द्वारा जबरन उर्दू भाषा के आरोपण तथा अनेक मुहाजीर (भारतीय मुस्लिम

शरणार्थी) जो बड़ी संख्या में भारत से सिन्ध में आकर बस गये उनके खिलाफ एक आन्दोलन था।

1972 में जी.एम. सैयद के द्वारा सिन्धियों के लिए एक अलग राष्ट्र के निर्माण का सुझाव दिया है जिसे 'सिन्धु देश' कहा जाये। यह पहले राजनेता थे जिन्होंने पाकिस्तान में रहकर ही अलग राष्ट्र की मांग की। यह आन्दोलन सिन्धी भाषा तथा सिन्धियों की पहचान को बनाये रखने के लिए चलाया गया। यह आन्दोलन 'बंगाली भाषा आन्दोलन' प्रेरित होकर सैयद ने चलाया। यह आन्दोलन सैयद के द्वारा राजनीतिक रूप से काफी समय तक चलाया गया। पाकिस्तान से अब वे खुले रूप में अलग होकर नया 'सिन्धु देश' बनाने की मांग करने लगे। इस सन्दर्भ में उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी। **Heeyar Pakistan they tutatan Khappey (Now Pakistan should disintegrate) and Sindhu Desh – (A Nation in Chains).**

कई सिन्धी प्रवासियों द्वारा तथा भारत के सिन्धियों द्वारा भी इस संकल्पना का समर्थन किया गया। मुख्यतः उन भारतीय सिन्धियों द्वारा जिनकी सम्पत्ति तथा कुछ के परिवार भी विभाजन के दौरान सिन्ध में छूट गये थे। वर्तमान में भी सिन्ध में इस तरह के कुछ आन्दोलन हुए हैं। वैसे तो जिस भी संगठन/दल द्वारा इस प्रकार के आन्दोलन किये गये उन्हें पाकिस्तानी सरकार द्वारा 'आतंकवादी, विरोधी राज्य तथा तोड़फोड़' के तहत प्रतिबन्ध लगा दिये गये।

फिर भी मार्च 2012 में कराची में एक 'सिन्धु देश रैली' निकाली गई जिसे बहुत ही कम मत मिले जो कि JSQM (Jiye Sindh Qaumi Mahaz) की स्वतंत्रता जुलूस से प्रेरित थी इसमें हजारों की संख्या में लोगों ने अलग सिन्धुदेश की मांग के तहत रैली निकाली। 25 जनवरी 2014 को JSMM (Jeay Sindh Muttahida Mahaz) समर्थक अलगाववादी थे द्वारा 'सिन्धु देश' के समर्थन में हड़ताल की गई जिसमें हैदराबाद, थाडो, अहलयार, अतीआरी, घोटकी प्रान्त भी सम्मिलित थे। सिन्ध के लोग अपने आप को अलग राष्ट्र के रूप में तथा सम्पूर्ण राष्ट्र के रूप में रखने के लिए हमेशा ही संघर्षशील तथा दृढ़ निश्चयी रहे हैं। सिन्ध UNPO (Unrepresented Nation and People

Organization) का सदस्य भी है जो कि UNPO का अधिकृत क्षेत्र घोषित है और सिन्ध UNPO द्वारा World Sindhi Institute के रूप में भी प्रदर्शित है।

अजमेर क्षेत्र में सिन्धियों का पुनर्वासन

विभाजन के दौरान जब सिन्धी प्रवासित होकर आये तो बॉम्बे के बाद राजस्थान में ज्यादातर सिन्धी हिन्दू आकर बसे। राजस्थान में भी रूप से जोधपुर, उदयपुर, जयपुर, अलवर, अजमेर, मेरवाड़ा, देवली क्षेत्र प्रमुख थे।

1951 के जनसंख्या आंकड़ों के अनुसार उस समय अजमेर की कुल सिन्धी जनसंख्या 46,914 थी जिसमें 25,029 पुरूष तथा 21,885 महिलाएं थी। दैनिक भास्कर के 8 अप्रैल शुक्रवार को प्रकाशित लेख के अनुसार 2016 तक अजमेर क्षेत्र में सिन्धी समाज की जनसंख्या 1.75 लाख है।

बंटवारे की भीषण त्रासदी का पाकिस्तान में बसे जिन हिन्दू समाजों ने सामना किया उनमें एक सिन्धी समाज भी था। अपने ही देश में बंटवारे के बाद यह समाज शरणार्थी बन गया तत्कालीन पडित जवाहरलाल नेहरू सरकार ने इनके लिए व्यवस्थाएं की। अजमेर के रावण की बगीची इलाके में विस्थापित कॉलोनी भी बनी। विस्थापितों के लिए शिविर नसीराबाद छावनी क्षेत्र, परकोटा क्षेत्र (आशागंज, पड़ाव, दिल्ली गेट, आगरा गेट, ऊसरी गेट में लगाये गये)। जब अजमेर में ये लोग आकर बसे तब इनकी स्थिति बहुत ही दयनीय थी, परन्तु किसी भी काम को छोटा या हीन नहीं माना। साइकिल के पंक्चर बनाने से पापड़ बेचने तक का काम किया इस समाज के लोगों ने। इसलिए तो आज अजमेर में सौ करोड़ से ज्यादा के सिन्धी आसामियों की संख्या सौ से भी अधिक है।

इस प्रकार समाज ने नई परिस्थितियों के न केवल सामाजिक बल्कि आर्थिक, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक सामन्जस्य भी स्थापित किया। इस प्रकार सिन्धी समाज का अद्‌भुत सामन्जस्य और लोगों के लिए एक सीख है कि कोई भी काम छोटा नहीं है, सब प्राणी है कोई छोटा या अछूत नहीं है, परिश्रम से कमाएं और उसका उपभोग भी करें, जिस

क्षेत्र में प्रवेश करें उस पर छा जायें, खुद को स्थापित करें और फिर समाज के अन्य लोगों को भी अवसर दें।

कारोबार में दिन रात जुटे रहने के कारण ही सिन्धी समाज का अजमेर की अर्थव्यवस्था में भारी योगदान है। यहां 200-500 करोड़ का कारोबार करने वाले दो दर्जन से ज्यादा कारोबारी है। 500-1000 करोड़ का कारोबार करने वाले दस से ज्यादा कारोबारी है। अजमेर की अर्थव्यवस्था में विदेशों में बसे अप्रवासी भारतीयों का बड़ा योगदान है। बैंकिंग क्षेत्र के सूत्रों के मुताबिक सालाना 1000 करोड़ से ज्यादा योगदान रहता है। अजमेर के 500-600 अप्रवासी भारतीय विदेशों में बसे हुए है और वहां कारोबार कर रहे है। अजमेर में एन.आर.आई. (NRI) के लिए अलग से शाखा भी है। इनमें से ज्यादातर NRI सिन्धी समाज के ही है। सिन्धी समाज जरूरतमंदो की मदद करने में भी पीछे नहीं है, यह जिस तरह सामाजिक सरोकारों से जुड़ा है, वो अन्य समाजों को रास्ता दिखा रहा है।

नरेन शाहनी भगत, महेन्द्र तिर्थाणी, जगदीश वच्छानी जैसे कई प्रमुख लोग सामाजिक सरोकारों की नई इबारते गढ़ने में लगे है। अजमेर में सिन्धी सैन्ट्रल पंचायत, पूज्य पारब्रह्म ट्रस्ट, हालाणी दरबार, सिन्धु समिति, जीव सेवा समिति, सुधार सभा, स्वामी बसंतराम दरबार, प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्श नगर जैसे कई संगठन सेवा कर रहे है। शिक्षा के लिए 80 प्रतिशत तक फीस माफ की जाती है। चिकित्सा के क्षेत्र में तो इन संगठनों का बेहतरीन काम है, यूरोलॉजी का प्रसिद्ध कैम्प सिन्धी समाज के जीव सेवा समिति के सौजन्य से लगता है। दयाल वीना संस्थान में अजमेर के अन्य संस्थानों की तुलना में कम दर पर मेडिकल जांचें की जाती है।

सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक सभी क्षेत्रों में योगदान के बाद राजनीति का क्षेत्र सिन्धी समाज से कैसे अछूता रहता। 1 नवम्बर 1956 को राजस्थान में अजमेर-मेरवाड़ा का विलय हुआ। उस समय विधानसभा चुनाव की दृष्टि से अजमेर दो भागों पूर्व और पश्चिम (वर्तमान दक्षिण और उत्तर) दो भागों में विभक्त था। 1957 से अब तक पश्चिम क्षेत्र या वर्तमान उत्तर क्षेत्र में तो सिन्धी विधायकों का ही वर्चस्व रहा। 1957 में अर्जुन दास

(निर्दलीय पार्टी) से चुने गये, उसके बाद 1962 में पाहुमल (कांग्रेस पार्टी), 1967 में भगवान दास (जनसंघ पार्टी), 1972 में किशन मोटवानी (कांग्रेस पार्टी), 1977 में नवलराय बच्चानी (भारतीय जनता पार्टी) 1980 में फिर से भगवान दास, 1985 में किशन मोटवानी पुनः निर्वाचित हुए। 28 अक्टूबर 1986 से 1 मार्च 1990 तक ये विधानसभा उपाध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहे। बीसलपुर बांध का पानी अजमेर लाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। जो कि वर्तमान में सम्पूर्ण अजमेर जिले के लए जीवनदायिनी बनी है। इसके अलावा किशन मोटवानी जी के द्वारा आदर्श नगर स्थित सेटेलाईट अस्पताल का भी निर्माण करवाया गया। 1990 में हरीश झामनानी (भारतीय जनता पार्टी) से निर्वाचित हुए, 1993 और उसके बाद 1998 में पुनः किशन मोटवानी चुने गये। 1998 में इनकी अकस्मात् निधन के कारण रिक्त हुई पश्चिम विधानसभा सीट पर उपचुनाव हुआ उसमें 1999 में नानक राम जगतराय कांग्रेस प्रत्याक्षी निर्वाचित हुए। उसके पश्चात् 2003 में वासुदेव देवनानी अजमेर पश्चिम क्षेत्र से विधानसभा चुनाव में निर्वाचित हुए उन्हें राज्यमन्त्री (तकनीकी शिक्षा) प्रभार दिया गया। 2008 में नये परिसीमन लागू होने के कारण पश्चिम विधानसभा अजमेर उत्तर में परिवर्तित हो गई। तब से लगातार दो बार 2008 और 2013 हुए चुनावों में अजमेर उत्तर से वासुदेव देवनानी ही विजयी रहे। 2013 में ही उन्हें राज्य मन्त्री (स्वतन्त्र प्रभार) प्राथमिक माध्यमिक शिक्षा मन्त्रालय दिया गया। वर्तमान में ये अजमेर जिले के प्रभारी मन्त्री के रूप में कार्यरत है। इस प्रकार 1957 से 2016 तक निर्विरोध सिर्फ सिन्धी विधायकों का ही अजमेर पश्चिम क्षेत्र (वर्तमान उत्तर) निर्वाचित होना एक बड़ी उपलब्धि है। वासुदेव देवनानी जी के द्वारा कोटड़ा क्षेत्र में सिन्ध के अन्तिम शासक दाहरसेन की स्मृति में दाहरसेन स्मारक स्थापित करवाया गया है। ऋषि घाटी आनासागर वैकल्पिक मार्ग का निर्माण, नई व पुरानी आनसागर चौपाटी का निर्माण करवाया गया। इसके अलावा अजमेर जिले में नई शिक्षण संस्थाएं इनके द्वारा खुलवाई गयी जिसमें अजमेर अभियांत्रिक महाविद्यालय व महिला अभियांत्रिक महाविद्यालय मुख्य रूप से है वे अजमेर जिले में कई विद्यालयों का नवनिर्माण और उन्हें क्रमोन्नत करवाया गया। इस प्रकार देवनानी जी के द्वारा न केवल सिन्धी समाज के लिए बल्कि सम्पूर्ण अजमेर के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अजमेर का दक्षिण क्षेत्र सिन्धी समाज के लिए एक प्रकार से अघोषित सिन्धी संरक्षित पीठ ही बन गया है।

इस प्रकार अजमेर क्षेत्र में तो सिन्धी समाज पूर्ण रूप से समायोजित हो चुका है। स्वयं आर्थिक रूप से सक्षम होने के बाद समाज के लिए इनका प्रत्येक क्षेत्र में योगदान सराहनीय है।

शोध की समस्या और महत्व

लगभग 67 वर्ष पूर्व 20वीं शताब्दी का अगस्त माह भारतीय उपमहाद्वीप में बहुत ही हिंसक रहा। इस घटना का परिणाम पूर्णतः अप्रत्याशित था। इस निर्णय का शिकार लाखों मुस्लिम, सिन्धी, हिन्दू और सिख हुए। 19वीं शताब्दी के अन्त में कई राष्ट्रीय आन्दोलन भारत में शुरू हुए। जहां भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा 'अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन' चलाया गया वहीं मुस्लिम लीग द्वारा 1943 में 'विभाजन और भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पास किया गया। वहीं ब्रिटिश/अंग्रेजां द्वारा 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनायी गयी। उन्हें यह ज्ञात था कि भारत के लोगों स्वाभाविक प्रवृति धार्मिक है। विभाजन के लिए अंग्रेज, कांग्रेस और मुस्लिम लीग तीनों ही जिम्मेदार है। तीनों ने ही विभाजन के द्वारा अपना स्वार्थ सिद्ध किया। जिसका परिणाम लाखों लोगों को भुगतना पड़ां हजारों लोग मारे गये, हजारों मासूम बच्चे गुम हो गये, महिलाओं को प्रताड़ित किया गया।

इस प्रकार धर्म सम्प्रदाय के नाम पर विभाजन करना आप में बहुत बड़ी समस्या है। जबरन-मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं को इस्लाम धर्म स्वीकार कराया गया अतः हिन्दुओं की धार्मिक आस्था को आघात पहुँचा। न केवल धार्मिक बल्कि इतनी भारी संख्या में विस्थापितों के प्रवासन ने देश में आर्थिक समस्या को भी जन्म दिया। वर्तमान में भी धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर हिन्दू मुस्लिम विवाद होना आम समस्या है। भारत जैसे धार्मिक सहिष्णुता प्रधान देश में इस प्रकार की समस्या ने देश की जड़ों को अन्दर ही अन्दर खोखला कर दिया है। यह देश की प्रगति में भी बाधक है। प्रवासन का प्रभाव देश की शान्ति, सुरक्षा तथा स्थायित्व पर भी पड़ा है।

महत्व - प्रस्तुत शोध के द्वारा आधुनिक पीढ़ी विभाजन के कारणों को तथा उसके हिंसक परिणामों को समझ पायेगी। यह भी जान जायेगी कि सिन्धी, हिन्दुओं, सिखों द्वारा किस कठिन परिस्थितियों में नये समाज तथा लोगों के सामन्जस्य स्थापित किया गया।

विभाजन और उसके हिंसक दिनों का अनुभव, सामान्य लोगों पर विभाजन अपनी जन्मभूमि मातृभूमि सिन्ध से बिछड़ने का दर्द, आधुनिक पीढ़ी महसूस कर पायेगी।

1947 से अब तक सिन्धियों में आये सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक बदलाव तथा उनके नये वातावरण के साथ पुर्नस्थापन को स्पष्ट करने का प्रयास किया जायेगा, साथ ही वर्तमान लुप्त होती हुई सिन्धी सभ्यता और संस्कृति के लुप्त होने के कारणों को जानकर उसे संरक्षित किया जा सकेगा।

उल्लासनगर एक व्यापारिक कस्बा है जहां पर कई छोटे पैमाने पर उद्योग धन्धे विकसित हैं। All India Sindhi Samiti के सचिव साईं बलराम के अनुसार ईसाई मिशनरियों ने छोटे व्यापारियों की अपने व्यापार को पुनःस्थापित करने में मदद की है उन्हीं के द्वारा उस समय से धर्म परिवर्तन की लहर चली है।

जबकि उल्लासनगर के लोगों के अनुसार 'हमने अपनी आस्था बदली है न कि धर्म।' समाज के लोगों के अनुसार उन्होंने अपनी मातृभूमि सिन्ध को विभाजन के समय इसलिए छोड़ा कि उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं था। वर्तमान में सिन्धी समाज में इस तरह का परिवर्तन चिन्ताजनक है।

शोध के उद्‌देश्य

1. विभाजन का राष्ट्र और सिन्धी लोगों पर पड़ने वाले प्रभाव का परीक्षण और विश्लेषण करना।
2. सिन्धी समाज की विभाजन से पूर्व तथा बाद की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. सिन्धियों के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, साहित्यिक आदि पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. सिन्धी समुदाय ने दु:खद विभाजन पश्चात् अपने मूल स्थान से निर्वासित हो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पुनर्वासित होकर अपनी संस्कृति, वेशभूषा, खानपान, रीति-रिवाज, भाषा एवं पहचान को बनाये रखा।
2. भारत में पुनर्वासित होकर विभिन्न क्षेत्रों में जैसे राजनीति, शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, कला, आर्थिक आदि में चहुंमुखी प्रगति की गई।
3. विदेशों में बसकर देश को विदेशी मुद्रा का अर्जन कराने में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अध्ययन तकनीक

प्रस्तावित शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा विषय से सम्बन्धित अब तक प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य सामग्री का अध्ययन तथा अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों को विभिन्न स्त्रोतों से एकत्रित कर उनका अध्ययन, संकलन, संपादन, समवर्धन, मानचित्रण, सारणीकरण एवं संश्लेषण किया जायेगा। सांख्यिकी तकनीक मूल्यांकन में सहायक होगी। आवश्यकतानुसार आंकड़ों के विश्लेषण के लिए कम्प्यूटर तकनीक का उपयोग करना होगा। सामान्य, तुलनात्मक आर्थिक बदलाव, सामाजिक बदलाव, क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए एक प्रश्नावली तैयार कर शोधकर्ता द्वारा प्रतिदर्श के आधार पर परिवारों में पहुँच कर पूर्ण की जायेगी।

सूचनाएँ एकत्रित करने हेतु शोध, लेख, जर्नल, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, समाचार पत्र, वेब साईट तथा साक्षात्कार विधि को भी उचित स्थान देने का प्रयास होगा। इसके अतिरिक्त छायाचित्रों का भी विभिन्न पहलूओं को प्रदर्शित करने हेतु उपयोग किया जायेगा।

फोटोग्राफी के माध्यम से वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत किया जायेगा। तथ्यों के विश्लेषण व विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त कर व्याख्या की जायेगी, तथा सम्भावित सुझाव देकर शोध कार्य पूर्ण किया जायेगा।

पूर्व साहित्यिक समीक्षा

- K.R. Malakani, 1984 'The Sindh Story' Allied publications, में उन्होंने सिन्ध के इतिहास को वर्णन किया है तथा सिन्ध को सूफी सन्त की नगरी 'दैव्य भूमि' की संज्ञा दी है। आक्रमणकारी अलेकजेण्डर का सिन्ध पर शासन 326 B.C. में रहा तथा दारहसेन सिन्ध के अन्तिम शासक थे। उन्होंने कराची के 'पूर्व की रानी' कहा। सिन्ध विभाजन के साथ उन्होंने सिन्धी सभ्यता और संस्कृति को भी बताया है।
- सुभद्रा आनन्द, 1996 'National Integration of Sindhis' विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली में उन्होंने सिन्धियों का सामाजिक उद्‌भव भारत विभाजन और सिन्धियों के प्रवासन को बताया। उनका विघटन और पुर्नवासन मुख्यतः किन नगरों में हुआ इनमें उन्होंने उन्होंने उल्लासनगर को मुख्य 'सिन्धुनगर' के रूप में बताया है। सिन्धियों को सामाजिक आर्थिक बदलाव को प्रस्तुत किया है।
- सराह अंसारी, 2005 Life after partition : Migration, Community and Strife in Sindh, 1947-1962 Oxford University Press, ISBN के अनुसार 1947 में ब्रिटिश राज्य का विभाजन हुआ तथा साथ ही बड़ी संख्या में लोगों के प्रवासन के द्वारा दो नये स्वतन्त्र देश भारत और पाकिस्तान का निर्माण हुआ। अपने अध्ययन का विस्तार किया। उनके अनुसार 1843 में ब्रिटिश द्वारा सिन्ध राज्य का हरण कर लिया गया तथा 1947 में इसे पाकिस्तान में समावेशित किया गया। उन्होंने भारत और पाकिस्तान के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में पुर्नस्थापन बताया। यह सबसे दर्दनाक प्रवासन था जिसने युवा राष्ट्र की न के केवल जनसांख्यिकी को बदला बल्कि नये सामाजिक-राजनीतिक स्वरूप की भी रचना की।
- लता जगतियानी, 2006 'Sindhi Replections : 140 lives and Indian Partition जो Oct-Dec में प्रकाशित हुई थी के अनुसार आज विभाजन को लगभग 60 वर्ष बीत चुके हैं। सिन्धी हिन्दू लोगों को अपने ही देश से निकालने का दर्द बहुत ही दर्दनाक था। लोगों के अनुभवों द्वारा उन्होंने वह निष्कर्ष निकाला कि

यह बहुत ही आश्चर्यजनक बात है कि हमारे समाज ने बहुत अच्छा Survive किया जैसे आग में तपकर बने सोनो/कई उतार-चढ़ाव झेलने के बाद आज हमारे समाज के लोगों ने कला विज्ञान, अभियान्त्रिकी, कई अन्य क्षेत्रों में सराहनीय सफला प्राप्त की है। इनकी किताब लालकृष्ण आडवाणी द्वारा अग्रेषित की गई है।

- साज अग्रवाल 'Sindh Stories from A Vanished Homeland' में उन्होंने बताया कि किस तरह 1947 के विभाजन के बाद लाखों सिन्धी हिन्दुओं को पाकिस्तान से भारतीय तट पर जबरन भेज दिया गया तथा सिन्ध विभाजन का इतिहास पूरी तरह अलग है क्योंकि पंजाब और बंगाल प्रान्त का भौतिकीय विभाजन किया गया जबकि सिन्ध प्रान्त पूर्ण रूप से पाकिस्तान में सम्मिलित कर दिया गया।
- रीटा कोठारी, 2014 Unborders Memories : Sindhi Stories of Partition में बताया कि किस तरह विभाजन ने सिन्धी हिन्दुओं का जीवन घर भाषा संस्कृति सब बदल दिया तथा किस तरह उन्होंने नई मातृभूमि में अनभिलाषित महसूस किया जो कि 4 मई 2014 को प्रकाशित हुई।
- शोधार्थी नन्दिता भावनानी, 29 जुलाई 2014 'The Making of Exile' जो कि प्रकाशित हुई के प्रथम भाग में हिन्दु सिन्धियों की सिन्ध में स्थिति द्वितीय भाग सिन्धियों का भारत में आवासन बताया है तथा प्रकाशित तथा उनके बच्चों के लिए लगाये गये शरणार्थी शिविरों की मलिन व्यवस्था का वर्णन किया है।

लेख (ARTICLES)

- एन तालबोत और गुरहापाल सिंह (कराची विश्वविद्यालय प्रेस, 1999) द्वारा सम्पादित एक शोध पत्र क्षेत्र और विभाजन : बंगाल, पंजाब तथा उप महाद्वीप का विभाजन The Partition of Region Subcontinent' Pakistan Persfective में प्रकाशित किया गया है। लेखक श्रीमान युनुस सामद ने भारत विभाजन के कारण के प्रश्नों का विवेचन किया है।

- श्रीमान अहमद अजीज द्वारा प्रस्तावित एक शोध पत्र प्रकरण 'Orphans of the Storm: Stories on the Partition of the India' 'काली रात' किताब जो कि सारोस कोवासजी और के.एस. दंगल नई दिल्ली UBS Publishers, Distributors Pvt. Ltd. 1995 में लिया गया।
- शोधार्थी कन्हैयालाल टांक, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर 2002 ने अपने लेख 'सामाजिक स्तरीकरण एवं परिवार सिन्धी समुदाय में सामाजिक रूपान्तरण' में सिन्धीयों के सामाजिक बदलाव को उल्लेख किया है।
- शोधकर्ता दास वर्मा ने अपने शोध पत्र Composition of the personal voice: Volence and migration में अपना व्यक्तिगत शोक, अहिंसा और प्रवास विभाजन की शाम 1947 में व्यक्त किया है जो कि 'इतिहास का अध्ययन' पत्रिका में 3 नवम्बर 2011 को प्रकाशित हुआ।
- ग्वालियर के कवि, लेखक एवं सम्पादक - दीपक 'भारतीय' द्वारा 14 अक्टूबर 2011 में प्रकाशित पत्रिता दीपक भारतदीप का चिन्तन पत्रिका जम्मू कश्तीर ये जनमत संग्रह या आत्मनिर्णय से अधिक महत्वपूर्ण है सिन्धी की आजादी का प्रश्न' के अनुसार विभाजन का मुद्दा संवेदनशील ज्ञानी बुद्धिजीवी दो प्रकार के लोग होते हैं। पेशेवर बुद्धिजीवी विदेश प्रयोजन के चलते मानव अधिकारों की आड़ में जनमत की माँग करते हैं तथा ज्ञानी लोगों को पता है कि यह पैसे का खेल है अतः कुछ नहीं बोलते। सभी पेशेवर बुद्धिजीवी लोग जो पाकिस्तान एजेंडा के साथ है चाहते हैं जम्मू कश्मीर पाकिस्तान में मिला दिया जाये परन्तु इनके द्वारा सिन्ध के बारे में कोई प्रश्न नहीं किया जाता है कि उसे भारत में पुनः मिला दिया जाये।

शोध पत्रिका (JOURNALS)

- INDUS ASIA ONLINE JOURNAL (IAOJ) Singh : Beyond Symols by Bina SNAH के अनुसार 8 दिसम्बर सिन्ध में सिन्धी सांस्कृतिक दिवस के रूप में मनाया जाता है। टीवी पर सिन्धी गाने तथा कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं। सिन्धी संस्कृति और उसके प्रतीक के रूप में सिन्धी तथा सिन्धियत का अर्थ

जैसे खो गया है। क्योंकि लाखों सिन्धी यहां से प्रवासित होकर चले गये। यह उन लाखों लोगों जैसे अफगानी, उर्दू, पाखतुल बोलने वाले मुहाजीर जो कई दशकों से यहां आकर बस गये, उन्हें भी अनदेखा नहीं कर सकता है। गहराई से सोचे जानी वाली बात यह है कि विभाजन के पश्चात् सिन्ध ने अपनी भाषा तथा संस्कृति सब कुछ खो दिया।

- Indus Asia Online Journal (I A O J) 'The I visible partition of Sindhi' भारत -पाकिस्तान विभाजन के समय 3 लाख सिन्धी प्रवासित होकर भारत आये जिनमें से ज्यादातर आर्थिक दृष्टि से अन्य हिन्दू जातियों से कमजोर थे। जो कि ताहिर मेहंदी के द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसमें उन्होंने यह बताया कि जब विभाजन हुआ तब सिन्धियों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी तथा 375 में से 1 सिन्धी ही अपनी मातृभूमि छोड़कर बाहर जाना चाहता था। परन्तु आज सिन्धियों ने न केवल भारत में बल्कि विदेशों में मुख्य रूप से सिंगापुर, अमेरिका, कनाडा और आस्ट्रेलिया में व्यवसायिक क्षेत्र में सराहनीय उन्नति की है।
- Kstreetjournal wordpress com 29 Sep. 2013 The Identity! (Musings of a Modern Day Sindhi) के अनुसार सिन्ध सूफी और सन्त की भूमि थी और इन्होंने सिन्धी संस्कृति को बहुत अधिक प्रभावित किया जैसे सन्त शिक्षा का आज भी सिन्धी समाज के लोग पालन करते हैं। परन्तु आधुनिक समय में सिन्धी पीढ़ी द्वारा सिन्धी भाषा को पसन्द नहीं किया जाता है कुछ माता-पिता तो अपने बच्चों से घर पर सिन्धी में बोलना भी पसन्द नहीं करते इसका स्थान हिन्दी और अंग्रेजी ने ले लिया है।
- The Journal of Asian Studies के एक लेख डेविड गिलमार्टिन द्वारा प्रस्तुत भारत विभाजन का इतिहास लेखन : सभ्यता और आधुनिकता के मध्य के अनुसार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस को भारत विभाजन का जिम्मेदार ठहराया तथा यह भी कहा कि यदि उस समय जवाहर लाल नेहरू की जगह धर्म निरपेक्ष सरदार पटेल होते तो शायद विभाजन होता ही नहीं। विभाजन के मुख्य अंग्रेजों की फूट डालो और शासन करो की नीति रही, तथा मुस्लिम समाज का विशेष तुष्टीकरण करना विभाजन धर्म के आधार पर हुआ।

समाचार–पत्र (NEWS PAPERS)

- Times of India, Bombay, 25 September 1947 में शेख अब्दुल माजीद सिन्धी द्वारा लिखे गये एक लेख के अनुसार विभाजन का परिणाम लूटपाट, खून, धर्म के आधार पर बलपूर्वक रूपान्तरण, मासूस आदमी और महिलाओं का नरसंहार, बच्चे जिनकी आंखों में कानून का कोई डर नहीं रहा। गांव, कस्बे शहर आग में जल गये। लाखों लोगों मातृभूमि रहित शरणार्थी बन गए सब जगह महामारी फैल गयी। यही हिन्दुस्तान की आजादी और पाकिस्तान की आजादी कहलाई।
- The Express Tribune Pakistan's Newspaper Karachi Feb. 12, 2013 में के अनुसार कराची में 8 सिन्ध असेम्बली द्वारा संशोधन बिल 2012 के अनुसार का अधिकारिक नाम 'Sind' से 'Sindh' रख लिया है। यह संशोधन अधिनियम 2010 के संशोधन 18 के अनुसार किया गया।

उपन्यास (NOVEL)

- उपन्यासकार खुशवन्त सिंह ने अपने उपन्यास 'Train to Pakistan' में लिखा है कि 1947 की गर्मियों में जब पाकिस्तान के अलग राज्य बनने की घोषणा की गई तब लाखों मुस्लिम, सिन्धी हिन्दू और सिखों का प्रवासन हुआ। कई मारे गये पुरा उत्तरी भारत आतंक से झूज रहा था उसी आतंक के भय में एक छोटा सा गांव था 'मनो मजरा' उपन्यास के शुरूआती भाग में उन्होंने बताया कि पिछले सौ से भी अधिक वर्षों से किस तरह सिख और मुस्लिम रात्रि में एक साथ रह रहे थे। फिर एक दिन गर्मियों के अन्त में एक 'Ghost Train' आई जो कि लाखों शरणार्थियों के शवों से भरी पड़ी थी तब गांव ने पहली बार आतंक का भय महसूस किया। यह एक अलग गांव की कहती है जो कि धार्मिक नफरत से बिल्कुल दूर था।

पूर्व शोध साहित्यिक समीक्षा के अवलोकन से यह ज्ञात हुआ कि, यद्यपि शोध क्षेत्र से सम्बन्धित पूर्व में कई प्रकार के अनुसंधान लेख किताबें, प्रोजेक्ट, रिपोर्ट आदि तैयार

किये गये है, किन्तु सिन्धियों के भौगोलिक पुर्नस्थापन पर अजमेर क्षेत्र के सन्दर्भ में कोई कार्य नहीं हुआ है, अत: शोध का विषय नया है। प्रस्तुत शोध में सिन्धी समाज की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का प्रश्नावलियों आँकड़ों और व्यक्तिगत अनुभवों के आधार नये समाज में पुर्नस्थापन का अध्ययन किया जायेगा तथा 'शोध क्षेत्र' को विशिष्ट आधारों पर नवीन तथ्यों की खेज करके अनुसंधान को प्रमाणिक बनाया जायेगा।

प्रस्तावित शोध का अध्याय के अनुसार विवरण

कार्य योजना (Chapter Scheme)

1 शोध समस्या चयन और महत्व

- 1.1 शोध के उद्देश्य
- 1.2 पूर्व शोध की समीक्षा
- 1.3 परिकल्पनाएँ
- 1.4 विधितन्त्र

2 1947 पूर्व सिन्ध का भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिदृश्य

- 2.1 भौगोलिक स्थिति
- 2.2 सिन्धु नदी एवं सिन्धु घाटी और मोहनजोदड़ो सभ्यता
- 2.3 ऐतिहासिक परिपेक्ष्य (7000 ई.पू. -1947)
- 2.4 सिन्धियों का सामाजिक उदभव
- 2.5 विभाजन के समय सिन्ध सरकार की भूमिका

3 भारत विभाजन और सिन्धी समुदाय का निर्गमन

3.1 विभाजन के कारण और परिणाम

3.2 सिन्धी समुदाय का बड़े पैमाने पर निर्गमन

3.3 सिन्धी हिन्दुओं का अपनी मातृभूमि छोड़ने के कारण एवं प्रभाव

4 भारत में पुनर्वासन

4.1 सिन्धी जनसंख्या का भारत में पुनर्वासन

4.2 सिन्धियों का आगमन और शिविर स्थापन क्षेत्र

4.3 नये क्षेत्र के साथ समायोजन एवं अनुकूलन

4.4 भारत सरकार और स्थानीय लोगो की भूमिका

4.5 भारत विभाजन और महिलाओं पर प्रभाव

5 राजस्थान और अजमेर क्षेत्र में पुनर्वासन

5.1 राजस्थान का मुख्य पुनर्वासन के रूप में चुनाव

5.2 अजमेर क्षेत्र में पुनर्वासन

5.3 विभाजन से पूर्व और बाद की व्यवसायिक संरचना

5.4 दुकानें और अधिष्ठान

5.5 सिन्धी वास्तविक जनसंख्या और प्रक्षेपण

6 अजमेर क्षेत्र में सिन्धी समुदाय का स्थानिक प्रभाव

6.1 आर्थिक क्षेत्र

6.2 सामाजिक – सांस्कृतिक प्रभाव

6.3 राजनैतिक प्रभाव

6.4 शिक्षा क्षेत्र

6.5 अन्य सेवाऐं (विदेश, चिकित्सा आदि)

7 विश्लेषण एवं परिणाम

8 निष्कर्ष एवं सुझाव

संलग्न – प्रश्नोत्तरी, अभिलेख एवं अन्य सामग्री

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शोध पर्यवेक्षक **शोधार्थी**

(डॉ. अजय कुमार शर्मा) **(भूमिका गोविन्दानी उर्फ राजकुमारी)**

व्याख्याता, भूगोल विभाग,

एस.पी.सी. राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

दिनांक : ....

सन्दर्भ सूची (BIBLIOGRAPHY)

Books and Articles

- Abbot J., Sind, a Re-interpretation of the Unhappy Valley, Humprey Milford, London, 1924.
- Ackerman Nath and Jahoda Marie, Anti-Semitism and Emotional Disorder, Harpr Brothers, New York, 1950.
- Adorno, T.F. *The Authoritative Personality*, New York: Harper Brothers, 1950.
- Aitken, E.H., *Gazetter of the Province of Sind*, Printed for the Government at the "Marcantile" Steam Press, Karachi, 1907.
- Ajwani, L.H. *Golden Jubilee Book of Dayaram Jethmal Sind College, Karachi 1887-1937*, Karachi, 1939.
- Ajwani, L.H. *History of Sindhi Literature*, Sahitya Akadami, New Delhi, 1970.
- Alexander, Horace, *New Citizens of India*, Oxford University Press, Oxford, 1951.
- Angell, Robert Cooley, *The Integration of American Society – A Study of Group and Institution*, McGraw Hill, New York, 1941.
- Barnow, Victor, "Social Structure of a Sindhi Refugee Community", Reprinted from *Social Forces* Vol. 33, No. 2, New York, December 1954.
- Bose, A.N., *India's Urbanisation, 1901-2001*, Tata McGraw Hill, New Delhi, 1976.
- Bose, A.N., "Informal Sector, Problems and Prospects," Paper presented at a seminar on Urban Informal Sector, New Delhi, 1980.

- Brass, Paul, R., "Elite Groups, Symbol Manipulaton and Ethnic Identity among the Muslims of South Asia", *Political Identity in South Asia,* (eds.), David Taylor and M.Yapp, Curzon Press, London, 1979.
- Brandwein, Paul, F., *Source of Identity*, Centre for the Study of Instruction, San Francisco, California, Harcourt Bruce Jovanowich, New York, 1964.
- Bunting, Ethel, J., *Sindhi Tombs and Textiles – The Persistence of Pattern,* Maxwell Museum of Anthopology Publication, University of New Mexico Press, 1980.
- Burton, R.F., *Sind and the Races that inhabit the Valley of Indus*, Win H. Allen Co., London, 1851.
- Carr, E.H., *What is History*? R.W. Davies (ed.), Penguin Books, London, 1987.
- Choksey, R.D. and Shastri, K.S., *The Story of Sind*, Dastane Ramchandra & Co., Pune, 1983.
- Claude, Ake, *A Theory of Political Integration*, Dorsey Press, Illinois, 1967.
- Claude, Innish, Jr., *National Minorities on International Problem*, Harvard University Press, Harvard, 1955.
- Cohen, Abner, *Two Dimensioned Man, An Essay on the Anthropology of Power and Symbolism in Complex Society*, Berkeley, 1974.
- Daswani, C.J., *Movement for the Recognition of Sindhi and for the Choice of a Script for Sindhi*, Language Movements of India, Mysore, CIIL. 1979.

- Daswani, C.J. and Parchani, S., *Socio-Linguistic Survey of Indian Sidhi,* Central Institute of Indian Languages, Mysore, 1978.
- Dauodpote, U.M., "Survey of Sindhi Literature", *Sind People and Progress,* Director of Information, Karachi, August, 1954.
- Deutsch, Karl, W., *Nationalism and Social Communication*, Harvard University Press, Harvard, 1953.
- Deutsch, Karl, W., "Social Mobilisation and Political Development", *American Political Science Review*, New York, September, 1961.
- Deutsch, Karl, W. and Foltz, J., (eds.), *Nation Building*, Prentic Hall International, London, 1963.
- Dr. Subhdra Anand "National Integration of Sindhu Vikas Publication house Pvt. Lml. New Delhi 1996.
- Elliot H.M. and Sawson J (ed.), History of India, Vol. I, Trubner and W., London: 1907.
- Emperson, Rupert From Empire to Nation, Harvard University Press, Boston, 1960.
- Geertz, Clifford, (ed.), "The Integrative Revolution, Primordial Sentiments and Civil Politics in New States", *Old Societies and New States, The Quest for Modernization in Asia and Africa,* The Free Press of Glencoe, New York, 1967.
- Ghurye, G.S., Social Tensions in India, Popular Prakashan, Bombay, 1968.
- Glazer, Nathan and David Moynihan, Ethnicity, Theory and Experience, Cambridge University Press, Massachusets, 1975.
- Grierson, G.A., Linguistic Survey of India and the Census of 1911, Vol. VIII, Calcutta, 1919.

- Hadden, A.C., *The Wonderings of People*, Cambridge University Press, Masachusetts, 1911, 1927.
- Hastings, James (ed.), *Encyclopedia of Religion and Ethics*, Vol. IX, T & T Clark Edinburgh: First ed. 1917, Sixth Edition 1967.
- Hiranandani, Popati, *Sindhis a Scattered Treasure*, Malaah Publications, New Delhi, 1980.
- Hiranandani, Popati, *History of Sindhi Literature*, 1947-1978, Anuradha Publication, Bombay, 1984.
- Hughes, A.W. *Gazetteer of the Province of Sind*, George Bell and sons second ed., London, 1878.
- Jotwani, Motilal. *Shah Abdul Latif, his life and work – A Study of Socio-Cultural and Literary situations in 18th Century Sind*, University of Delhi, Delhi, 1975.
- Karnukaran, T.K., *Ulhasnagar, a Sociological Study in Urban Development*, Unpublished M.A. Thesis submitted in Sociology, University of Bombay, May 1958.
- Karve, Irawati, Maharashtra, Land and its People, Maharashtra State Gazetteer, Bombay, 1968.
- Karachi : Royal Book Weekes, Richard V (1964). **खान, अंसार जाहिद (1980) सिंध का इतिहास और संस्कृति** Pakistan Birth and Growth of a muslim nation Princeton, N.J. : Von Nostrand.
- Kothari, Rajani, *Politics in India*, Orient Longman, New Delhi, 1972.
- Kothurkar, V.K., “A Study of Provincial Stereotypes of Two Different Groups,” Paper presented at the Indian Science Congress, 1953.

- K.R. Malkani, Kewal Ram (1984). The Sindh Story Allied Publishers Pvt. Ltd.
- Kulke, Eckehard, *The Parsees in India: A Minority as an agent of social change*, Vikas Publishing House, New Delhi, 1978.
- Kurup, Ramchandra, *Urban Informal Enterprise, A Case Study in Ulhasnagar City*, Unpublished Thesis, Department of Economics, Univeristy of Bombay, 1984.
- Lambrick, H.T., *Sir Charles Napier and Sind*, Clarendon Press, Oxford, 1952.
- Lambrick, H.T., *Sind a General Introduction*, Hyderabad Sindhi Adabi Board, Hyderabad, 1964.
- Lata Jagtiani's book Sindhi Refections : 140 Lioes and the Indian Partition Published in Oct-Dec. 2006.
- Locke, Alain and Stern, Bernhard. *When Peoples Meet : A Study in Race and Culture Contacts*, Hayden and Eldredge, New York, 1946.
- Malhotra, S.L., "National Integration a Gandhian Perspective", from National Integration, A Symposium Dr. Ramjilal (ed.), Dayalsingh College, Karnal, 1987.
- Moreno, J.L., *Who shall survive*?, Free Press of Glencoe, Illnios, 1960.
- Murphey, H.B., Flight and Resettlement, UNESCO, Paris, 1955.
- Nair, Kusum, *Blossoms in the Dust*, Praegen, New York, 1961.
- Nanavati, M.B. and Vakil, C.N., *Group Prejudices in India, A Symposium*, Vora & Co., Bombay, 1951.
- Narsain, J.J., *The Amil Community of Sind, Hyderabad*, Unpublished Thesis of the University of Bombay, 1932.

- Oburn William F. and Nimkoff, Meyer F., *A Handbook of Sociology*, Routledge and Kegan Paul, London, 1947, 1953, 1960.
- Palkiwala, Nani, A. *India's Priceless Heritage*, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay, 1989.
- Phadnis, Urmilla, *Ethnicity and Nation Building in South Asia, A Case Study of Sri Lanka*, National Book Trust, New Delhi, 1973.
- Pirennes Jacques, *The Tides of History*, Vol. II, George Allen and Unwin, London, 1962-63.
- Pithawala, Manik, "Population Trends in Sind Today", *Sind People and Progress*, Director of Information, Karachi, August, 1954.
- Popala, T.S., *Informal Sector, Concept and Policy, Seminar on Urban Informal Sector*, Delhi, February 1980.
- Riley, M.W. and Riley, J.W., *The Measurement of Consensus*, Sociology Series Vol. 31, McGraw Hill, New York, 1962.
- Saarinen Eliel, *The City of New York*, Reinhold Publishing Corporation, New York, 1943.
- Saksena, R.N., *Refugees, A Study in Changing Attitudes*, Asia Publishing House, Bombay, 1961.
- Sarah Ansari Book – Life after partition : Migration, community and strif in Sindh, 1947-1962.
- Sayed, G.M., *A Case for Sindhudesh*, New Great Printery, Bombay, 1985.
- Schimmet, Annemarie, "Sindhi Liturature", *A History of Indian Literature*, Vol. VIII, Otto, Harrassowitz, Wiesbaden, 1974.

- Shuval, Judith T., "Migration and Stress", Leo Goldberger, Shlomo Breznitz (eds. 1982), *Handbook of Stress, Theoretical and Clinical Aspects*, The Free Press New York, 1982.
- Sindh : Stories from a Vanished Homland by Saaz Aggarwal.
- Simpson, Sir Hope John, *Refugees, A Review of the situation since 1938,* Royal Institute of International Affairs, London, 1939.
- Simpson and Yinger, *Racial and Cultural Minorities*, New York, Harper and Row, 1953.
- Somervell, D.C., An Abridged Version of *A Study of History* by Arnold J. Toynbee, Vol. 1, Oxford University Press, New York and London, 1974.
- Sorley, H.T., *Shah Abdul Latif of Bhit, His Poetry, Life and Times, A Study of Literary, Social and Economic Conditions in 18th Century Sind*, Oxford University Press, London, 1940.
- Srinivasan, Nirmala, *Identity Crisis of Muslims, Problems of Lucknow Youth*, Concept Publishing Co., New Delhi, 1981.
- Taylor, David, and Rubb, Peter, (eds.), *Rule, Protest, Identity, Aspects of Modern South Asia*, Curzon Press Ltd., London, 1978.
- Thakur, U.T., *Sindhi Culture*, Sociology Series No. 9, University of Bombay Publication, 1959.
- The Making of a Exile : Sindhi hindus & the Partition of India Nandita Bhavnani.
- Todd, James, *Annals and Antiquties of Rajasthan*, Vol. II, Routledge and Kegan Paul, London, 1829, 1832, 1923.

- Toynbee, Arnold, *Between Oxus and Jumna*, Oxford University Press, London, 1961.
- Trumpp, Earnest, Grammer of the Sindhi Language, Asian Educational Services, New Delhi, 1986, (Original London, 1872)
- Vakil, C.N. and Cabinetmaker, P.H., *Government and the Displaced Persons, A Study of Social Tension*, Vol. I, New York, 1948.
- Young, Kimbal, *Social Psychology*, Appleton Century Crofts, (second edition), New York, 1956.
- Young, Kimbal, Personality and Problem of Adjustment, Kegan Paul, London, 1947.

Newspapers and Journals

- Dainik Bhasker, Ajmer 8 April 2016, Page no.8.
- Hindustan Times - Jagtinai, J.A. "Sandhi Refugees, "May 1, 1972".
- Hindustan Times - Lalwani, "Displaced Person," July 15, 1967.
- Hindustan Times - Rajika Kriplani, "Sindhis in Indian" July 23, 1972.
- Indian Express - Jagtiani, J.A. "Old and New Refugees (Refugees from Sind) September 29, 1972 Bombay
- Indian Express - "Refugees from Sind" August 9, 1972, Bombay.

- “Sindh; not Sind The Express Tribune” (Web desk) 12 Feb. 2013 Retrieved 16 Oct. 2015.
- The Express Tribun Pakistan Feb 12, 2013.
- Times of India, Bombay, 25 Sep. 1947.
- Times of India - Chander G. Ajwani “Sindhi State”, - June 30, 1969, Bombay.
- Times of India - Sindhi Refugees not compelled to Return, November 23, 1973, Bombay.
- Times of India - Sindhi Status and Rights July, 21, 1978.
- Times of India - Tekchandani, N.D. “Harassament of Refugees”, October 5, 1974, Bombay.
- Times of India - Vikram Rao K., “Peteable Plight of Refugees from Sind” August 5, 1972, Bombay.
- Http://dawn.com/news/1036021/the-invisible-partition-of-sindh/2
- Http://journals : Cambridge.org/abstractS0021911814001685
- Http://kstreetionrnal.wordpress.com/

Blogs

- Census Report of India, 1951 as presented in the Sindhi culture by Dr. V.T. Thakur.
- Foreign unfluence on acient India by Krishna Chandra Sagar.

- Gregory L. Possefal (11 Nov. 2002) The Indus Civilization : A Contemporary Perspective. Rowman Altamira P. 80 ISBN 9780759116429.
- "Mohen-jo-daro : Could this ancient city be lost Forever?" BBD 27 June 2012 Retrieved 27 Oct. 2012.
- Oxford University Press, 2005, ISBN.
- Pakistan Social & living Standard Measurement Survey 2013-14.
- "Responsibility to Preserve Mohenjodaro Transferred to Sindh" The News com. Pk, 10 Feb 2011.
- Retrieved 14 May 2012.
- The Cambridge history of Southeast asia by Nicholas Tarling P. 39.

Websites

- pwdsindh.govt.pk
- www.jhulelal.com
- www.shodhlganga.infrilnet.ac.in
- www.sindhiassocation.org
- www.sindhiexodus.net
- www.sindhisaan.com
- www.sindhisangat.com
- www.sindhology.org
- www.sindhwelfare.org
- Sindh government history page, Retrieved 2006-12-02.

- "Sindh (State, Pakistan)" at Encyclopedia Britannic online.
- World history Encyclopedia 'Mughal <Muhammad Aurangzeb (2011) Mohenjo – Claro's Sewars.